SUSHANT UNIVERSITY ORGANIZED INTERNATIONAL CONFERENCE ON
"ADVANCES IN MULTIDISCIPLINARY RESEARCH AND INNVOATION" ICAMRI-2023
ON 28-29TH OCTOBER 2023
INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
July-December 2023, Submitted in October 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

आधुनिक हिंदी महिला उपन्यासों में नारी अस्मिता का एक अध्ययन

आदित्य श्याम देव, शोध छात्र, हिन्दी विभाग, मंगलायतन विश्वविद्यालय वेसवा, अलीगढ
डॉ घनेश कुमार मीना, शोध निर्देशक, हिन्दी विभाग, मंगलायतन विश्वविद्यालय वेसवा, अलीगढ

सारांश

आधुनिक समय में उपन्यास साहित्य की सर्वाधिक समर्थ विधा है। उपन्यासों के माध्यम से जीवन की घटनाओं तथा तथ्यों को गत्यात्मक रूप से पाठक के सामने प्रस्तुत किया जाता है। उपन्यासों के माध्यम से महिला के जीवन की अनेक चुनौतियां एवं समस्याएं उभरती एवं समाधान प्राप्त करती हैं। लेखक के शब्दों से पाठक अपने भावों को आत्मसात कर उपन्यास का चाक्षुष प्रतिरूपण कर पाता है। कदाचित इसलिए ही 'आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी' के शब्दों में ''उपन्यास आधुनिक युग की देन है। नए उपन्यास केवल कथामात्र ही नहीं है यह आधुनिक व्यक्तिवादी दृष्टिकोण का परिणाम है। इसमें लेखक अपना एक निश्चित मत प्रकट करता है तथा कथा को इस प्रकार सजाता है कि पाठक अनायास ही उसके उद्देश्य को ग्रहण कर सकें तथा उससे प्रभावित हो सकें। धर्म, समाज, और साहित्य में स्त्री विभिन्न रूपों में परिभाषित की गई है एवं अधिकांश परिभाषाएं लैंगिकता की परिधि में जांची और परखी गई हैं। नारी का अस्तित्ववादी चिंतन इन परिभाषाओं के खिलाफ अपने स्वर को बुलंद करता है। नारी अस्तित्व एवं उसके सामाजिक पहचान की परंपरा का एक इतिहास रहा है। महादेवी वर्मा समाज में स्त्री के प्रभुत्व एवं उनके उपयोगिता के संदर्भ में लिखती हैं,"हमें न किसी पर जय चाहिए न किसी से पराजय, न किसी पर प्रभुता चाहिए न प्रभुत्व, केवल अपना वह स्थान, वह स्वत्व चाहिए जिनका पुरुषों के निकट कोई उपयोग नहीं है, परंतु जिनके बिना हम समाज का उपयोगी अंग नहीं बन पा रही हैं।" स्त्री को बाजार ने इन्वेस्टर से लेकर उपभोक्ता तक और वस्तु से लेकर मनोरंजन के साधन तक बना दिया। बाजार ने स्त्री को सौंदर्य के नाम पर विभिन्न प्रोडक्ट आदि दिये, किन्तु उसे हकीकत में जो चाहिए था वह हमेशा उससे छिनता ही रहा है। हमारे देश में विकास के लिए जिस नमूने का अनुसरण आज किया जा रहा है वह पूंजीवादी उत्पादन व्यवस्था पर आधारित है। भारतीय इतिहास साक्षी है कि पूंजीवादी उत्पादन व्यवस्था के अंतर्गत होने वाला विकास लिंग आधारित भूमिकाओं और स्त्रियों के शोषण को ही बढ़ावा देता है।